अमेरिकी विश्वविद्यालयों में उद्यमी बनने के गुर

एंड्रज़ेज ज़्वानिकी

सैयद हुसैन ने वर्ष 2007 में जब अपना कारोबार शुरू किया तो उनकी इच्छा थी ट्यूशन के नाम पर होने वाली लूटाखसोटी का मुकाबला। ट्यूशन के नाम पर उनसे अंडरग्रेजुएट की पढ़ाई के दौरान मांगी गई 60 से 70 डॉलर प्रति घंटे की फ़ीस को वह इसी नाम से पुकारते हैं।

ट्यूशन लेने की हैसियत न होने की पीड़ा ने हुसैन को यूप्रॉडिज़ी विकसित करने के लिए प्रेरित किया। इस कंपनी से वह दक्षिण एशिया और अमेरिका के 120 अंग्रेजी माध्यम वाले शिक्षकों के जरिये अमेरिका के कॉलेज विद्यार्थियों को कम खर्च पर पढ़ाई के लिए ऑनलाइन मदद उपलब्ध करा रहे हैं। यूप्रॉडिज़ी कंपनी तो सफलता के पायदान चढ़ ही रही है, साथ ही हुसैन का यह कारोबारी आइडिया एक प्रमुख कारोबारी आइडिया प्रतियोगिता में विजेता के रूप में चुना गया है। यह प्रतियोगिता थी मेसाच्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) की एक लाख डॉलर की बिज़नेस प्लान प्रतियोगिता। अमेरिका के कॉलेज और विश्वविद्यालयों द्वारा विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने के तौरतरीकों में से यह एक है। प्रतियोगिता में विजेताओं को नकद इनाम और विजेता विद्यार्थी उद्यमियों को बिज़नेस सेवाएं प्रदान की जाती हैं। ये उद्यमी रुझान वाले छात्र अपने नए उपक्रमों के लिए सर्वश्रेष्ठ कारोबारी योजना बनाते हैं।

स्टैनफ़र्ड टेक्नोलॉजी वेंचर्स प्रोग्राम की कार्यकारी निदेशक टीना सीलिग कहती हैं कि अब सिर्फ तकनीकी प्रशिक्षण से काम नहीं चल सकता। उनके अनुसार, जैव प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी में विकास के चलते ''हमें ऐसे वैज्ञानिक और इंजीनियरों की ज़रूरत है जो आइडिया को प्रयोगशाला के बाहर बाज़ार तक सफलतापूर्वक ले जा सकें।''

पहले उद्यमिता विकास कार्यक्रम सिर्फ बिज़नेस शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तक सीमित होते थे। फिर 1990 के दशक में इसमें परिवर्तन आया और शिक्षाविदों ने महसूस किया कि बदलती दुनिया में सफल होने के लिए विज्ञान, इंजीनियरिंग और अन्य विषयों के छात्रों को भी उद्यमिता और नेतृत्व के गुर जानने की ज़रुरत है। वर्ष 1970 में इस तरह के पाठ्यक्रमों की संख्या बहुत कम थी। लेकिन वर्ष 2003 के एक अध्ययन के अनुसार इस शताब्दी के शुरुआती दशक में अमेरिका में 1,600 विश्वविद्यालय और कॉलेज 2,200 उद्यमिता पाठ्यक्रम संचालित कर रहे थे। विद्यार्थियों के बीच इन पाठ्यक्रमों की लोकप्रियता बढ़ी है।

एमआईटी उद्यमिता केंद्र के चेयरमैन एडवर्ड रॉबर्ट्स कहते हैं कि नेतृत्व क्षमता और नए आइडिया और उत्पादों को आगे बढ़ा सकने योग्य ग्रेजुएटों की बढ़ती मांग के चलते एमआईटी को भी अपनी रणनीति बदलनी पड़ी हालांकि वहां उद्यमिता की लंबी परंपरा रही है। रॉबर्ट्स ने यह केंद्र 1996 में एमआईटी के विभिन्न विभागों और संस्थानों के प्रबंधन क्षमता वाले तकनीकी विशेषज्ञों के लिए शुरू किया था। उद्यमिता विकास शिक्षण के लिए हुई अन्य पहल में प्रौद्योगिकी सुधार केंद्र और किसी उपक्रम के लिए मार्गदर्शन सेवाएं शुरू करना शामिल हैं। रॉबर्ट्स के शब्दों में इससे सकारात्मक माहौल बना। एमआईटी की उद्यमिता विकास के क्षेत्र में बड़ी प्रतिष्ठा के चलते उद्यमी बनने की महत्वाकांक्षा वाले विद्यार्थी यहां आते हैं और बाद में ये विद्यार्थी एमआईटी की प्रतिष्ठा में चार चांद लगाते हैं। रॉबर्ट्स के अनुसार, ''पिछले 10 सालों में हमने एमआईटी से जुड़े लोगों द्वारा नए उपक्रम शुरू होने में तेज़ी से बढ़ोतरी देखी है।''

प्रौद्योगिकी सुधार केंद्र के अनुसार एमआईटी से किसी तरह का संबंध रखने वाली 150 कंपनियां हर साल शुरू होती हैं। यह संस्थान अपने पड़ोसी और प्रतिस्पर्धी हार्वार्ड यूनिवर्सिटी के साथ कैम्ब्रिज, मेसाच्यूसेट्स के इर्दगिर्द विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कंपनियों के जमावड़े रूट 128 की स्थापना का श्रेय लेता है।

साभार: विकिपीडिया

सैयद अब हार्वार्ड यूनिवर्सिटी में ग्रेजुएट विद्यार्थी हैं। वह कहते हैं कि वह और उनकी कंपनी इन दोनों संस्थानों द्वारा पोषित उद्यमिता संस्कृति के माहौल में प्रगति कर रहे हैं। वह कारोबारी लिहाज से संपर्क के अवसर और शुरुआत में कारोबार को जमाने के लिए मार्गदर्शन तक पहुंच को खास तौर पर मूल्यवान मानते हैं। वह कहते हैं, ''मैं फोन उठाकर पिछले हफ़्ते मिले किसी व्यक्ति से धनराशि, सलाह या फिर किसी संपर्क तक पहुंच हासिल कर सकता हूं।''

© यू.पी.: क्लिवलैंड मिडटाउन इनोवेशन सेंटर, क्लीवलैंड

ऊपर: क्लीवलैंड मिडटाउन इनोवेशन सेंटर, क्लीवलैंड में कार्यरत माइक स्क्वासिक। यहां माइक्रोसिस्टम्स एकेडेमी के युवा विद्यार्थियों ने ऐसी कंपनी शुरू करने का आइडिया खोजा जो नवोदित उच्च प्रौद्योगिकी कंपनियों की मदद करे। बाएं: कीर्नी स्थित नेब्रास्का विश्वविद्यालय के विद्यार्थी उद्यमिता पुरस्कार विजेता छात्र बेल टॉवर के पास। इन छात्रों ने अपने एक साथी के साथ मिलकर ऐसा सिस्टम बनाया है कि बेल टॉवर में फिर से घंटियों की आवाज़ गूंजने लगे। ऊपर बाएं और नीचे: स्टैनफ़र्ड विश्वविद्यालय परिसर।

1990 के दशक के मध्य में उद्यमिता के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने वालों में स्टैनफ़र्ड यूनिवर्सिटी भी है जो दुनिया के जानेमाने सिलिकॉन वैली क्षेत्र, कैलिफ़ोर्निया के उच्च प्रौद्योगिकी के गढ़ के पीछे मुख्य ताकत मानी जाती है। स्टैनफ़र्ड ने जब महसूस किया कि उद्यमिता प्रशिक्षण को लेकर उसे सिलसिलेबद्ध तरीके और विभिन्न संस्थानों के बीच काम करने की ज़रूरत है तो उसने स्टैनफ़र्ड टेक्नोलॉजी वेंचर्स प्रोग्राम विकसित किया जिससे कि उद्यमिता से संबंधित गतिविधियों की ठोस नींव रखी जा सके। उद्यमिता पाठ्यक्रम में विश्वविद्यालय के उच्च प्रौद्योगिकी कारोबारी माहौल के बौद्धिक, उद्यमी और वित्तीय संसाधनों का लाभ लिया गया है। सीलिग के अनुसार, ''हमारे विद्यार्थी सीधे उद्यमी समुदाय और सिलिकॉन वैली के कारोबारी माहौल से जुड़ जाते हैं।'' इस पाठ्यक्रम में थोड़ा कम औपचारिक उद्यमिता सप्ताह भी आयोजित होता है जिसमें संपर्क बनाने के अवसर होते हैं और साथ ही इसके केंद्र में इंटरनेशनल इनोवेशन टूर्नामेंट भी आयोजित होता है। वर्ष 2007 के टूर्नामेंट में भागीदारों से कहा गया कि वे साधारण रबरबैंड के सृजनात्मक उपयोग के बारे में बताएं।

एमआईटी के उलट स्टैनफ़र्ड का उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम इस बात का आकलन नहीं करता

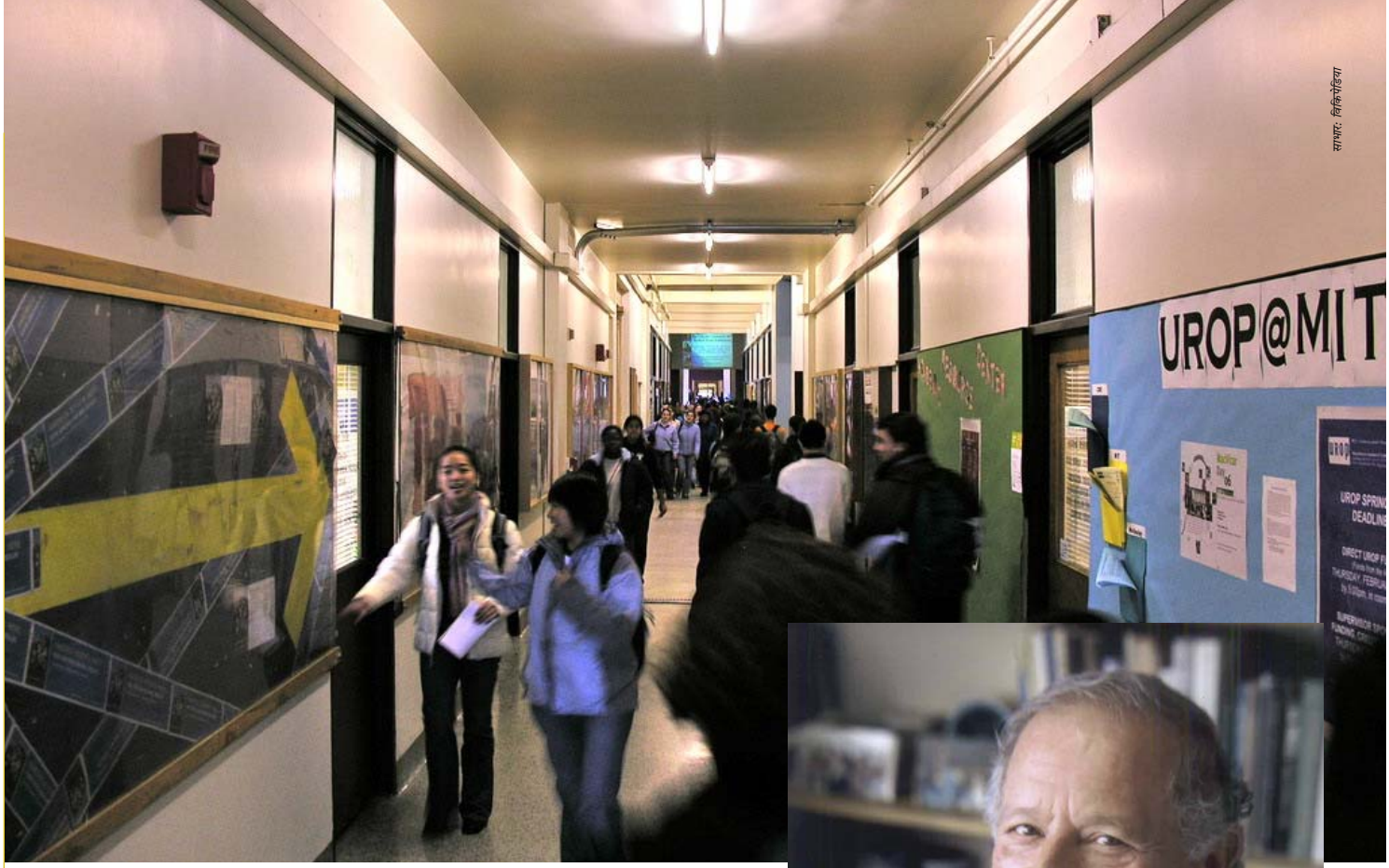

साभार: विकिपीडिया

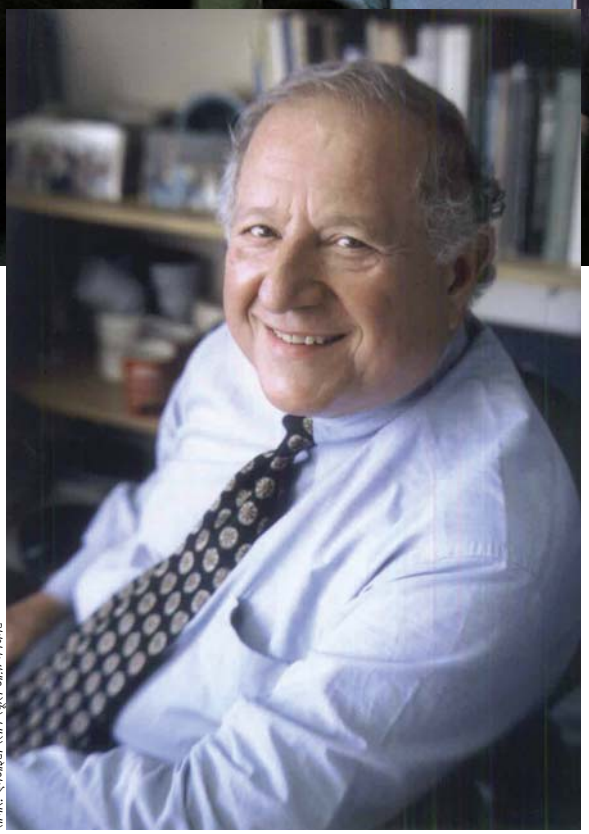

साभार: एमआईटी स्लोन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट

ऊपर: मेसाच्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी का परिसर। दाएं: एमआईटी उद्यमिता केंद्र के चेयरमैन एडवर्ड रॉबर्ट्स।

कि उसने कितने उपक्रम शुरू करवाने में भूमिका निभाई। सीलिग के अनुसार विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा शुरू की गई कंपनियों की संख्या गिनना बहुत ही सतही तरीका है। वह कहती हैं, ''हमारे पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की बड़ी मांग रहती है क्योंकि मसला उद्यमी मानसिकता का है न कि किसी कंपनी को शुरू करने का।'' लेकिन एमआईटी और स्टैनफ़र्ड के उद्यमिता प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भिन्नताओं के बजाय समानताएं ज़्यादा हैं।

ब्रिटिश गार्ज़ियन समाचारपत्र के एक रिपोर्टर ने 2002 में लिखा, ''एमआईटी, स्टैनफ़र्ड जाने वाले लोग... इस बात से चकित रह जाते हैं कि विश्वविद्यालयों के शोधकर्मियों और उस इलाके की उच्च प्रौद्योगिकी कंपनियों के बीच कितना गहरा रिश्ता है। जानेमाने शिक्षक कंपनियों के संस्थापक या निदेशक होते हैं... उनके ग्रेजुएट विद्यार्थी कंपनियों की प्रयोगशालाओं में काम करते हैं... जहां तक शोध का सवाल है, यह बताना मुश्किल है कि विश्वविद्यालय की सीमा कहां समाप्त होती है और कहां इंडस्ट्री शुरू हो जाती है।''

> ''नेतृत्व क्षमता रखने वाले और नए विचारों एवं उत्पादों को आगे बढ़ा सकने वाले ग्रेजुएटों की बढ़ती मांग के चलते एमआईटी को भी अपनी रणनीति में बदलाव लाना पड़ा।''

दोनों ही विश्वविद्यालय दुनियाभर में उद्यमिता का परचम फहरा रहे हैं। स्टैनफ़र्ड ने भारत में उद्यमिता शिक्षा के विकास में मदद की है। यह उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, यूरोप और एशिया में इस विषय पर अंतरराष्ट्रीय बैठकें आयोजित करता है। एमआईटी ने इसी तरह के प्रयासों में ब्रिटेन और डेनमार्क के प्रयासों में मदद की है। एमआईटी पूरी दुनिया के शिक्षाविदों के लिए उद्यमिता विकास कार्यक्रम भी संचालित करता है। एक लाख डॉलर की बिज़नेस प्लान प्रतियोगिता की तर्ज़ पर प्रतियोगिताओं को प्रोत्साहित करने के लिए यह हर साल किसी अलग देश में कार्यशाला का भी आयोजन करता है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

एमआईटी के उद्यमिता प्रशिक्षण केंद्र के बारे में जानकारी

http://entrepreneurship.mit.edu/who_we_are.php

एक लाख डॉलर की बिज़नेस प्लान प्रतियोगिता

http://www.mit100k.org/

स्टैनफ़र्ड यूनिवर्सिटी का उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम

http://stvp.stanford.edu/about/

एंड्रज़ेज ज़्वानिकी America.gov के कार्यालय संवाददाता हैं।